E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जोतिराव फुले और सत्यशोधक समाज : सामाजिक समरसता का वैचारिक एवं व्यावहारिक अध्ययन

नसीब सिंह
पी. एच. डी. शोधार्थी
इतिहास विभाग
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर

डॉ॰ ममता सिंह राजावत
शोध निर्देशिका
सहायक प्राध्यापिका
महाराजा मानसिंह महाविद्यालय,
ग्वालियर (म॰ प्र॰)

Paper Received date

05/06/2026

Publishing Date

10/06/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.20784866

सारांश

उन्नीसवीं शताब्दी का भारतीय समाज जातिगत विषमता, सामाजिक अन्याय, लैंगिक भेदभाव तथा धार्मिक रूढ़ियों से ग्रस्त था। ऐसे समय में महात्मा जोतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना करके सामाजिक परिवर्तन की एक नई धारा का सूत्रपात किया । सत्यशोध समाज ने शूद्रों, अतिशूद्रों, महिलाओं तथा अन्य वंचित वर्गों को सामाजिक न्याय, समानता और आत्मसम्मान प्रदान करने का प्रयास किया । प्रस्तुत शोध–पत्र में सत्यशोधक समाज के ऐतिहासिक विकास, उसके उद्देश्यों, सामाजिक समरसता की अवधारणा तथा सामाजिक न्याय की स्थापना में उसके योगदान का विश्लेषण किया गया है । अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सत्यशोधक समाज केवल एक सामाजिक सुधार संगठन नहीं था, बल्कि वह भारतीय समाज में समतामूलक परिवर्तन का एक व्यापक आंदोलन था ।

मुख्य–शब्द : जोतिराव फुले, सत्यशोध समाज, सामाजिक न्याय, समता, सामाजिक समरसता, महिला शिक्षा ।

IMPACT FACTOR 5.924

भारत में महात्मा जोतिराव फुले का प्रादुर्भाव 19वीं शताब्दी में हुआ था । उस समय देश में अंग्रेजों का एक औपनिवेशिक शक्ति के रूप में आगमन हो चुका था और भारत औपनिवेशिक पराधीनता एवं शोषणतन्त्र का शिकार बन चुका था । साथ ही देश सामाजिक दृष्टि से पतनोन्मुख हालात से जूझ रहा था ।

भारतीय समाज में व्याप्त इस जड़ता एवं रूढ़ीवाद को दूर करने के लिए 19वीं शताब्दी में अनेक समाज सुधार आन्दोलनों का जन्म हुआ । लगभग आधी शताब्दी तक देश में ऐसे आन्दोलन काफी तेजी से चले । ऐसे ही समाज सुधार आन्दोलनों में से एक आन्दोलन का सूत्रपात महान सुधारक महात्मा जोतिराव फुले ने महाराष्ट्र में किया ।

जोतिराव फुले मूल रूप से एक कर्मयोद्धा थें । जिनका मानना था कि सदियों पुरानी वर्चस्ववादी सामाजिक व्यवस्था को संघर्ष के बिना समाप्त नहीं किया जा सकता है । दरअसल, फुले केवल एक क्रांतिकारी सिद्धांत का प्रस्ताव देने मात्र से संतुष्ट नहीं थे, उन्होंने अपने सिद्धांत को व्यवहार में लाने की भरपूर कोशिश की । उनका लक्ष्य बहुत स्पष्ट था : परंपरावादी सत्ता और उनके वर्चस्व के खिलाफ लड़ना और दमित समूहों का उत्थान करना, यानी स्त्री–शूद–अतिशूद्रों को मुख्यधारा में लाना । वे जानते थें कि सामाजिक समरसता का यह कार्य कितना कठिन है ।

वास्तव में फुले ने हमेशा ईमानदारी से अपने सामाजिक–धार्मिक विचारों को कार्यरूप देने की कोशिश की । सामाजिक समरसता की दिशा में उनकी यह प्रतिबद्धता उन्हें अपने समकालीन सुधारकों से अलग करती थी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

। उदाहरण के लिए रानाडे की एक विधवा बहन थी । हालांकि उन्होंने हमेशा विधवा पुनर्विवाह का उपदेश दिया था, लेकिन वे अपनी बहन के मामले में अपने आदर्शवाद का पालन नहीं कर सके। वे अपने रूढ़िवादी पिता और अपने जाति–साथियों द्वारा बहिष्कृत होने से डरते थें । दूसरा मौका उनकी जिन्दगी में तब आया जब अक्टूबर 1873 में उनकी पहली पत्नी की मृत्यु हो गई । उन्होनें 32 साल की उम्र में एक महज 11 साल की लड़की के साथ पुनर्विवाह करने का फैसला किया। रानाडे के मित्र होने के नाते फुले ने उनके विरोधाभासी आचरण के लिए एक पत्र के माध्यम से उनके समक्ष अपनी नाराजगी व्यक्त की । उनके अपने व्यवहार में ऐसा कोई विरोधाभास नहीं था, ऐसा हम जान चुके हैं ।

उन्होंने महसूस किया कि मेहनतकश जातियों, जो हिंदू समाज के 'बहुजन' (बहुमत) का गठन करती हैं, को कुलीनों द्वारा स्थापित नए सामाजिक संगठनों के साथ जुड़ने के लिए नहीं छोड़ा जाना चाहिए । बल्कि सामाजिक समरसता के लिए उनको स्वयं समानता, नैतिकता, बंधुत्व जैसे सिद्धांतों के आधार पर अपना 'संगठन' बनाने के लिए आगे आना चाहिए । अंततः उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर 24 सितंबर 1873 को पूना में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की ।

इस अवसर पर फुले के अनुयाइयों में बहुत उत्साह था । यहां यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि जोतिराव के कई उच्च जाति के दोस्तों जैसे विनायक बापूजी भंडारकर, विनायक डेंगले और सीताराम सखाराम दातार ने भी 'समाज' की स्थापना में उनकी मदद की । बैठक में फुले को अध्यक्ष और कोषाध्यक्ष चुना गया, जबकि नारायणराव गोविंदराव कदलकर को प्रथम सचिव । 'समाज' के उद्देश्यों को बाद में इन शब्दों में परिभाषित किया गया । जो पूर्णतः सामाजिक समरसता के लिए समर्पित थे :

1. **"सत्यशोधक समाज की स्थापना कुछ बुद्धिमान शूद्र स्त्री–पुरुषों द्वारा भट्ट, जोशी, ब्राह्मणों, पुजारियों और कुछ दूसरे सवर्ण समूहों की जातिगत दासता से मुक्त होने के लिए की गई ।**
2. **सत्यशोधक समाज का उद्देश्य मुख्यतः स्त्री–शूद्रों के बीच शिक्षा का प्रसार करने के लिए प्रयास करना था, ताकि उन्हें उनके (मानव) अधिकारों के बारे में जागरुक किया जा सके और उन्हें (रूढ़िवादी) ब्राह्मणों द्वारा अपने खुद के स्वार्थ के लिए लिखी गई तथाकथित 'पवित्र' पुस्तकों के प्रभाव के बाहर निकाला जा सके ।**
3. **सत्यशोधक समाज की विचारधारा सभी प्रकार के ब्राह्मण वर्चस्व पर आधारित शोषण और असमानता के सभी धार्मिक स्रोतों को खारिज करती है ।**
4. **सत्योधक समाज समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे में विश्वास पर आधारित एक आदर्श समतामूलक समाज की स्थापना का सपना देखता है ।"**

किसी भी नए सदस्य को सत्यशोधक समाज में शामिल होने से पूर्व महाराष्ट्र के एक लोक देवता, यानी खंडोबा, और ब्रिटिश राज के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा करनी पड़ती थी । यहां यह उल्लेख किया जाना चाहिए कि यह केवल फुले का संगठन ही नहीं था जिसने अंग्रेजी के प्रति अपनी निष्ठा की घोषणा की थी, अपितु गोपाल कृष्ण गोखले के 'सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' ने भी स्पष्ट रूप से अपने ब्रिटिश संबंध को स्वीकार किया था और उनका मानना था कि नया औपनिवेशिक शासन "भारत की भलाई के लिए स्वयं ईश्वर द्वारा भेजा गया उपहार" था ।

सत्यशोधक समाज का एक और मुख्य उद्देश्य विशेष रूप से सभी शूद्र–अतिशूद्र पुरुषों और महिलाओं के मानवाधिकारों को हासिल करना था । सामाजिक समरसता की भावना से प्रेरित होकर इसने न केवल उनके अधिकारों को बहाल करने की मांग की, बल्कि उनकी समस्याओं के निवारण के लिए उपचारात्मक कार्रवाई भी की। इसने इस विश्वास को खारिज कर दिया कि कुछ मनुष्य जन्म से ही श्रेष्ठ या हीन होते हैं । 'समाज' के प्रत्येक सदस्य को निचली जातियों के बच्चों को निशुल्क शिक्षा देना आवश्यक था । 'समाज' ने जोर देकर

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कहा कि उनके लिए विशेष रूप से आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा आवश्यक है । आधुनिक शिक्षा न केवल संचारण कौशल में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं, बल्कि व्यावसायिक कौशल को भी बढ़ावा देती है । इसके साथ ही यह स्त्रियों व दलितों की बौद्धिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करने में भी सहायक है । इस कारण फुले ने एक नए नैतिक समुदाय के सच्चे प्रवक्ता के रूप में 'समाज' की सामाजिक व लौंगिक न्याय की विचारधारा पर आधारित एक पूर्ण कार्यक्रम का प्रस्ताव रखा ।

उल्लेखनीय है कि सत्यशोधक समाज ब्राह्मण पुजारियों की सहायता के बिना औपचारिक रूप से गृह प्रवेश, धार्मिक संस्कार और अन्य समारोह संपन्न करता था । यह कदम सामाजिक समरसता की स्थापना में एक महत्त्वपूर्ण पहल था क्योंकि इससे जाति आधारित बाधाएं टूट रही थी । 'समाज' के कई प्रमुख व्यक्तियों ने इसकी कई मिसालें कायम की । उदाहरण के लिए व्यंकु बालाजी कलेवर पहले गणपति चतुर्थी की पूर्व संध्या पर पुजारी जाति के सदस्यों को दान–दक्षिणा देते थें, लेकिन 'समाज' का सदस्य बनने के बाद उन्होंने उन्हें दान देना बंद कर दिया और उस राशि को विकलांग और गरीब लोगों को देने लगे । इसी तरह, राजन्ना जब समाज के सदस्य बन गए तो उन्होंने दिवाली के अवसर पर ब्राह्मणों को भोजन और वस्त्र देने की प्रथा को बंद कर दिया और उक्त भोजन व धन को उन छात्रों को देने लगे जो इस 'समाज' के सदस्यों में से आते थें। साथ ही जिन लोगों ने मैट्रिक में उच्चतम अंक प्राप्त किए थें, वे उनको स्वर्ण पदक से सम्मानित भी करने लगे ।

सत्यशोधक समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण और क्रांतिकारी कदम ब्राह्मण पुजारियों की सहायता के बिना 'सत्यशोधक विवाहों' का संचालन करना था । जो सामाजिक समरसता को साकार करने का सबसे सशक्त माध्यम था । ऐसे विवाहों के संचालन के लिए फुले ने 'मंगलाष्टक' या शादी के गीत लिखे, जो गेल ओमवेत के अनुसार उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले और समाज के सामाजिक–धार्मिक और लैंगिक आदर्शवाद को दर्शाते थें ।

1873–75 की रिपोर्ट के अनुसार सत्यशोधक समाज की रीति से दो विवाह पूना में हुए और ग्यारह विवाहों को "अत्याधिक गर्व के साथ" पास के ही भीलर गांव में संपन्न किया गया । साथ ही निचले वर्ग की जातियों के विवाहों में ब्राह्मण पुजारियों द्वारा जबरन वसूली की आलोचना की गई । पहला सत्यशोधक विवाह 25 दिसंबर 1873 को एक युवा विधुर और एक विधवा महिला के बीच कराया गया जो सावित्रीबाई की करीबी दोस्त थी । सीताराम जाबा जी आल्हाट दूल्हा थें जबकि राधाबाई दुल्हन । सत्यसमाजी स्यानोबा निंबाकर ने इस अनोखे विवाह के संचालन के लिए कड़ी मेहनत की। हालांकि कुछ विरोध हुआ, लेकिन शादी संपन्न हो गई । जो सामाजिक सामंजस्य की जीत थी ।

हालांकि रूढ़िवादी लोग इन विवाहों को मान्यता नहीं देते थें, लेकिन फुले कभी इस बात की परवाह नहीं करते थे क्योंकि सामाजिक सामानता उनके लिए सर्वोपरि थी । परिणामस्वरूप पूना जिले के ओटुर गांव में रूढ़िवादी ब्राह्मणों ने एक बैठक बुलाकर इस आशय का एक प्रस्ताव पारित किया कि बिना ब्राह्मण पुजारी के विवाह करने से उनके धार्मिक अधिकारों का अतिक्रमण होता है । उन्होंने बालाजी कुशाजी पाटिल के खिलाफ मामला दर्ज करने का भी फैसला किया, जिन्होंने किसी ब्राह्मण पुजारी की सहायता के बिना अपनी बेटी का विवाह करवाया था । न्यायाधीश एम॰ जी॰ रानाडे, जो शहर के एक प्रसिद्ध सुधारक भी थें, ने उनकी याचिका पर सुनवाई की । उन्होंने ब्राह्मण पुजारी के बिना विवाह समारोह करना 'गलत' माना और आदेश दिया कि भले ही पुजारी को शादी में आमंत्रित नहीं किया गया हों, उन्हें प्रथागत दक्षिणा, बतौर विवाह शुल्क दी जानी चाहिए । हालांकि बालाजी पाटिल के पक्ष में खड़े जोतिराव फुले ने इस फैसले को उच्च न्यायालय में चुनौति दी । हाईकोर्ट ने पाटिल के पक्ष में फैसला सुनाया । जिससे सामाजिक समरसता को कानूनी मान्यता मिली ।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सत्यशोधक समाज की वार्षिक रिपोर्ट में समाज के सदस्यों द्वारा कराए जाने वाले कई अन्य धार्मिक समारोहों के बारे में भी जानकारी मिलती है । विवाहों की तरह आर्यभट्ट ब्राह्मणों के दासपिंड, श्राद्ध आदि जैसे समारोह पुजारी की मध्यस्थता के बिना किए जाते थें । इसके अलावा ब्राह्मण के पैर की पूजा करने की एक जघन्य धार्मिक प्रथा महाराष्ट्र में प्रचलित थी । इस प्रथा के अंतर्गत उसके दाहिने पैर के अंगूठे को धोना आवश्यक था । यही नहीं उस पानी को 'तीर्थ' के रूप में लिया जाता और उसका सेवन किया भी जाता था । यह सामाजिक समरसता के बिलकुल विपरीत था । समाज के सदस्यों ने इस घृणित प्रथा का विरोध किया और इसे चलन से बाहर करवाया ।

धनंजय कीर हमें सूचित करते हैं कि न केवल गैर–ब्राह्मण, बल्कि ब्राह्मण भी सत्यशोधक समाज के सुधारों से लाभान्वित हुए थें। जो दर्शाता है कि सामाजिक समरसता से सभी वर्ग लाभन्वित हो सकते है । उदाहरण के लिए जब फुले ने समाज की ओर से नाइयों को एक अपील करते हुए कहा कि उन्हें विधवाओं के बाल काटने की रस्म में साथ नहीं देना चाहिए तो ऐसा करके उन्होंने कई ब्राह्मण विधवाओं को उक्त क्रूर और अमानवीय प्रथा से बचाया था। उन्होंने अपने ही घर में एक प्रसूति घर खोला, जिसके विषय में हम पहले जान चुके हैं । इस प्रसूति घर में भी अधिकांशतः ब्राह्मण विधवाओं ने ही आकर अपने अनचाहे बच्चे जन्म दिए । फुले द्वारा स्थापित प्रसूति गृह सामाजिक समरसता के व्यावहारिक प्रयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसमें जाति–धर्म से परे मानसेवा को प्राथमिकता दी गई ।

सामाजिक सुधार की उनकी पहल के परिणामस्वरूप फुले के सहयोगियों और सत्यसामाजियों को रूढ़िवादी हिंदुओं के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा, जिनमें उनकी अपनी माली जाति के लोग भी शमिल थे। उदाहरण के लिए ज्ञानोबा सासाने, जो एक सत्यसमाजी और फुले के करीबी सहयोगी थें, के विवाह के मामले में उनके गांव हड़पसर के लोग अपने पैतृक धर्म पर इस तथाकथित 'हमले' के खिलाफ उठ खड़े हुए । शादी से ठीक एक दिन पहले वे शाम को सासाने के घर के बाहर जमा हो गए और उसे गाली–गलौच और धमकी देने लगे । सासाने उनकी धमकियों से हिल गए और फुले को यह बताने के लिए दौड़ पड़े कि उन्होंने अपना मन बदल लिया है । फुले ने उसे साहस से काम लेने का आग्रह किया और उसे समझाया कि हम अब ब्रिटिश न्याय के संरक्षण में रह रहे हैं, अतः डरने की कोई जरूरत नहीं है । इस आश्वासन के बाद सासाने थोड़ी हिम्मत के साथ पुनः अपने गांव लौट गए । जब फुले को माली जाति के विरोध की गम्भीरता का एहसास हुआ तो उन्होंने अपने साथी राजन्ना लिंगू, जो पूना के जाने–माने वकील थें, को पत्र लिखा। लिंगू ने गंगाराम भाऊ म्हस्के, जो पूना में एक प्रमुख व्यक्ति और सत्यशोधक समाज के शुभचिंतक थें, को सासाने के लिए पुलिस सुरक्षा की व्यवस्था करने के लिए राजी किया । इस प्रकार पुलिस सुरक्षा के तहत इस विवाह को ब्राह्मण पुजारी के बिना आगे बढ़ाया गया । उक्त विवाह के बाद अपनी पुरानी धार्मिक मान्यताओं के उल्लंघन के 'प्रायश्चित' के रूप में रूढ़िवादी मालियों ने उसी समय एक दो साल की लड़की का बाल विवाह करवा दिया।

इस प्रकार, हिंदू समाज के रूढ़िवादी वर्गो के विरोध की परवाह किए बिना सत्यशोधक समाज सामाजिक सामंजस्य के लिए अपनी गतिविधियों का संचालन करता रहा । जुन्नार तालुका के तलवणे गांव के गुनाजी बापू पाटिल ने भी अपने घर में बिना पुजारी के एक सत्यशोधक विवाह किया। तालीगांव में एक नाई की इसी तरह की शादी हुई । इस कृत्य के लिए गांव के ब्राह्मणों द्वारा नाई परिवार का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया । नाई मदद के लिए फुले के पास गए । फुले ने उन्हें "बहिष्कार करने वालों का बहिष्कार करने" अर्थात् उनकी सेवा करने से इन्कार करने की सलाह दी यह सामाजिक समरसता के लिए एक अप्रत्यक्ष लेकिन प्रभावी रणनीति थी । नाइयों ने ऐसा ही किया । परिणामस्वरूप, ब्राह्मण आगे कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सके ।

जाहिर है, सत्यशोधक समाज रेडिकल था । लेकिन जितना फुले चाहते थें, उतना नहीं । ब्राह्मणों की सहायता के बिना किए गए विभिन्न विवाहों की संख्या काफी कम थी जो इसके सदस्यों की जीवन चर्चा के केवल एक छोटे से हिस्से का प्रतिनिधित्व करती थी। कभी–कभी फुले के अनुयायी भी अपने वैचारिक सरोकारों को

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

छोड़ने के लिए सामाजिक दबाव में आ जाते थें । यह दर्शाता है कि सामाजिक समरसता का मार्ग कितना कठिन था ।

समरसता की अपनी सामाजिक सुधार गतिविधियों को विस्तार देते हुए सत्यशोधक समाज ने पूना शहर में नई शराब नीति के तहत दुकानें खोलने के बम्बई सरकार के फैसले का इस आधार पर विरोध किया कि इससे शहर में नशे की समस्या और बढ़ जाएगी । क्योंकि नशा सामाजिक समरसता में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है । दरअसल, पूना शहर पहले कभी भी शराब की दुकानों के नजारे से परिचित नहीं था । लेकिन अब, ब्रिटिश शासन के तहत, भीड़–भाड़ वाले इलाकों में भी शराब की दुकानें खोली जाने लगी। इस प्रकार सार्वजनिक नैतिकता में गिरावट के बीज बोए जाने लगे । इस कारण फुले ने शहर में शराब की सर्वव्यापी खपत के बारे में गंभीरता से विचार किया । 8 जुलाई 1880 को उन्होंने पूना नगरपालिका की प्रबंध समिति के अध्यक्ष श्री प्लंकेट को कड़े शब्दों में एक पत्र लिखकर समस्या पर ध्यान आकर्षित किया और शहर में शराब की और अधिक दुकानों को अनुमति नहीं देने के लिए कहा। उन्होनें यह भी सुझाव दिया कि नगरपालिका को शराब की दुकानों पर सार्वजनिक नुकसान के अनुपात में कर लगाना चाहिए । यह सुझाव तो स्वीकार नहीं किया गया, हालांकि शराब की और दुकानें नहीं खोलने की उनकी मांग को स्वीकार कर लिया गया । जो सामाजिक समरसता के लिए एक छोटी लेकिन महत्त्वपूर्ण जीत थी।

1876–77 में पड़े एक भयंकर अकाल ने पश्चिमी महाराष्ट्र को लगभग तबाह कर दिया था । 20 अप्रैल 1877 को सावित्रीबाई फुले ने जोतिराव को जुन्नार से लिखे गए एक पत्र में अकाल पीड़ित लोग की सहायता करने की अपील की । इस पत्र से पता चलता है कि फुले–दम्पत्ति पीड़ित मानवता की सेवा में कितनी गहराई से संलग्न थें और यह सामाजिक समरसता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति थी।

वास्तव में, अकाल के उन मुश्किल दिनों के बीच लालची साहूकारों ने गरीब किसानों–मजदूरों की भोजन आदि की आवश्यकता का फायदा उठाकर पैसा बनाना शुरू कर दिया था । तमाम सत्यशोधक स्वयंसेवक राहत कार्य में लगे हुए थें तथा उन विनाशकारी हालातों में लोगों की जान बचाने की पूरी कोशिश कर रहे थें यह सामाजिक सद्भाव का व्यावहारिक रूप था । उन्हें अपने मुनाफे में बाधक समझकर साहूकारों ने प्रशासन के समक्ष उन पर दंगा कराने का झूठा आरोप लगाया । इसके विरोध में सावित्रीबाई फुले ने साहूकारों की गंदी राजनीति के कारण होने वाले नुक्सान के विरुद्ध प्रशासन को याचिका देते हुए वह सब करने के लिए कहा, जिसकी तत्काल आवश्यकता थी । कलेक्टर ने उसकी याचिका स्वीकार कर ली । सत्यसमाजियों को मुक्त कर दिया गया और उनके सामाजिक कार्यों की प्रशंसा की गई । सावित्रीबाई और उनके सत्यसमाजियों ने पूरे अकाल–काल के दौरान गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने की भरपूर कोशिशें की । 'समाज' की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि कैसे 1876–77 के अकाल के दौरान, जब फुले गोल्हे में पत्थर के खनन का काम कर रहे थें, उन्होंने (फुले) और कुछ अन्य माली ठेकेदारों ने बीमारों, विकलांगों और बच्चों के लिए एक अकाल राहत शिविर खोला । उन्होंने विशेष रूप से बच्चों के लिए धनकवाद राहत शिविर में 'विक्टोरिया बालश्रम' नाम से एक अनाथालय भी खोला, जहां दो हजार बच्चों को महीनों तक प्रतिदिन मुफ्त खाना खिलाया जाता रहा । फुले ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर अकाल के दौरान ही अनाथ बच्चों के कल्याण के लिए 52 बोर्डिंग स्कूल शुरू करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । यह सब सामाजिक संतुलन का सर्वोच्च उदाहरण है । इस नेक कार्य में श्री रामसेठ बापूसेठ उरावने श्री हान रावजी चिपलूणकर और पूना नगरपालिका के मुख्य अधिकारी श्री शिनप्पा जैसे उनके दोस्तों ने भी उनकी मदद की ।

1882 के बाद से फुले और उनके सहयोगियों ने सत्यशोधक समाज को बम्बई प्रेसीडेंसी (प्रान्त) के ग्रामीण क्षेत्रों में, विशेष रूप से पूना, अहमदनगर और थाना के कलेक्ट्रेट में, विस्तरित करने का प्रयास किया । 'समाज' की कल्याणकारी गतिविधियां न केवल पूना और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों तक फैली थीं, अपितु उन्हें देश के कुछ दूसरे भागों तक भी विस्तारित किया जा रहा था । जिससे सामाजिक समरसता का दायरा व्यापक

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

होता जा रहा था । उदाहरण के लिए समाज के सदस्यों द्वारा बाढ़ राहत हेतु एक सहायता राशि एकत्रित की गई, जिसे अहमदाबाद के लोगों के लिए भेजा गया था जिन्हें शहर में बाढ़ आने के कारण बहुत नुकसान हुआ था । इस प्रकार सत्यशोधक समाज की गतिविधियाँ सामाजिक समरसता के व्यापक लक्ष्य को साकार करने की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रही थी ।

निष्कर्ष रूप से ज्ञात होता है कि सत्यशोधक समाज केवल एक सुधारवादी संस्था नहीं बल्कि एक व्यापक वैचारिक क्रांति थी जिसने हाशिए पर स्थित वर्गों में आत्म–सम्मान और समानता की चेतना जागृत की । जोतिराव फुले ने शिक्षा, तार्किकता और संगठित प्रयासों के माध्यम से सदियों पुरानी शोषणकारी व्यवस्था की नींव को हिला दिया। ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती देते हुए सत्यशोधक विवाह और धार्मिक सुधारों के माध्यम से उन्होंने सामाजिक समरसता का एक व्यावहारिक मॉडल प्रस्तुत किया । अकाल राहत और अनाथालयों के माध्यम से की गई मानवीय सेवा उनकी करुणा और अटूट प्रतिबद्धता का प्रमाण है। यद्यपि उन्हें तत्कालीन रूढ़िवादी समाज के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने पीछे नहीं हटने का साहसी निर्णय लिया । अंततः, यह समाज दलितों, पिछड़ों और महिलाओं के उत्थान का मार्गदर्शक बना और आज भी सामाजिक न्याय के आंदोलनों के लिए प्रेरणा का एक अक्षय स्रोत है ।

संदर्भ सूची

1. जोतिराव फुले, ***ए बुक ऑफ दी यूनिवर्सल रिलिजन ऑफ ट्रूथ***, पी॰ जी॰ पाटिल (सं॰) पृ॰ 36.
2. गेल ओमवेट, ***कल्चरल रिवोल्ट इन ए कॉलोनियल सोसायटी : नॉन ब्राह्मण मूवमेंट इन वेस्टर्न इंडिया,*** पृ॰ 148–149.
3. एस॰ के॰ चहल, ***हिन्दू सोशल रिफार्म : द फ्रेमवर्क ऑफ जोतिराव फुले***, पृ॰ 284–85.
4. धनंजय कीर, ***महात्मा जोतिराव फुले : द फादर ऑफ इंडिया सोशल रिवॉल्यूशन***, पॉपुलर प्रकाशन, मुंबई, 1997, पृ॰ 127.
5. ***वही***, पृ॰ 126.
6. एस॰ के॰ चहल, ***पूर्व उद्धृत,*** पृ॰ 286.
7. जी॰ भद्रू॰ "कंट्रीब्यूशन ऑफ सत्यशोधक समाज टू दी लो कास्ट प्रोटेस्ट मूवमेंट इन नाइनटीथ सेंचुअरी", ***प्रोसेडिंग्स ऑफ दी इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस,*** (आई॰ एच॰ सी॰) खण्ड 63, 2002 पृ॰ 845–846
8. आदि एच॰ डॉक्टर, "लो कास्ट प्रोटेस्ट मूवमेंट इन नाइनटीथ एंड ट्वेन्टिन्थ सेंचुअरी : जोतिराव फुले एंड बी॰ आर॰ अम्बेड़कर," ***इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस,*** खण्ड–4, नवंबर 2, 1991, पृ॰ 207–208.
9. जी भद्रू, ***पूर्व उद्धृत***, *आई॰एच॰सी॰*, खण्ड 63 पृ॰ 849.
10. आर॰ उमापति, ***जोतिराव फुले : ए हिस्टोरिकल स्टडी ऑफ लाईफ एण्ड एचीवमेन्ट्स,*** पीएच॰डी॰ थीसिस, पेरियार विश्वविद्यालय, सलेम, 2007, पृ॰ 133.
11. ***वही***, पृ॰ 29–30.
12. एस॰ के॰ चहल, ***पूर्व उद्धृत,*** पृ॰ 295.
13. आदि एच डॉक्टर, ***पूर्व उद्धृत***, पृ॰ 207–208.
14. जी॰ भद्रू, ***पूर्व उद्धृत***, पृ॰ 349.
15. एस॰ के॰ चहल, ***पूर्व उद्धृत,*** पृ॰ 304.
16. गेल ओमवेट, "ए टीचर एण्ड ए लीडर" इन ब्रज रजंन मणि एण्ड पामेला सरदार (सं॰) ***पूर्व उद्धृत***, पृ॰ 29.
17. ***वही***, पृ॰ 29–30.
18. "पूना सत्यशोधक समाज की रिपोर्ट (24–09–1873 से 24–09–1975)", पृ॰ 2–3. एल॰ जी॰ मेश्राम 'विमलकीर्ति', (सं॰) ***पूर्व उद्धृत***, पृ॰ 255.
19. "पूना सत्यशोधक समाज की रिपोर्ट, (27–09–1873 से 24–09–1875)" एल॰ जी॰, मेश्राम 'विमलकीर्ति', (सं॰), ***पूर्व उद्धृत***, पृ॰ 246.
20. सत्यदीपिका, जून 1874.
21. ***वही***, पृ॰ 83–86.

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

22. "पूना सत्यशोधक समाज की रिपोर्ट, (27–9–1873 से 24–9–1875)", एल॰ जी॰ मेश्राम 'विमलकीर्ति' (सं॰), खण्ड 1, प॰ 243–244.
23. धनजंय कीर, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 205–206.
24. *वही*, पृ॰ 83–86.
25. पूना सत्यशोधक समाज की रिपोर्ट (27–09–1873 से 24–09–1875) *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 243–244.
26. रोजालिंड ओ हानलॉन, *कास्ट कनफिलम्ट एंड आइडियोलॉजी : महात्मा जोतिराव फुले एंड लो कास्ट प्रोटेस्ट इन नाइनटींथ सेन्चुअरी वेस्टर्न इण्डिया*, परमानेंट ब्लैक, नई दिल्ली, 2002, पृ॰ 241–243.
27. टी॰ लक्ष्मणाशास्त्री जोशी, *लेखसंग्रह*, श्रीविद्या प्रकाशन, पुणे, 1982, पृ॰ 53–54.
28. गेल ओमवेट, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 256–257.
29. *वही*, पृ॰ 46–47.
30. धनंजय कीर, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 150–151.
31. सुनील सरदार, *लव लेटर्स अनलाइक एनी अदर : सावित्रीबाईज थ्री लेटर्स टू जोतिबा*, ब्रजरंजन मणि एंड पामेला सरदार (सं॰) *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 46–47.
32. रोजलिंड ओ हैनलोन, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 249.
33. सुनील सरदार, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 46–47.
34. रोजलिंड ओ हैनलोन, *पूर्व उद्धृत*, पृ॰ 159.